अर्हत् वचन

ARHAT VACANA

वर्ष - 30, अंक - 4
Vol. - 30, Issue -4

UGC Approved Research Journal
No. 41376

अक्टूबर-दिसम्बर 20
October-December 201

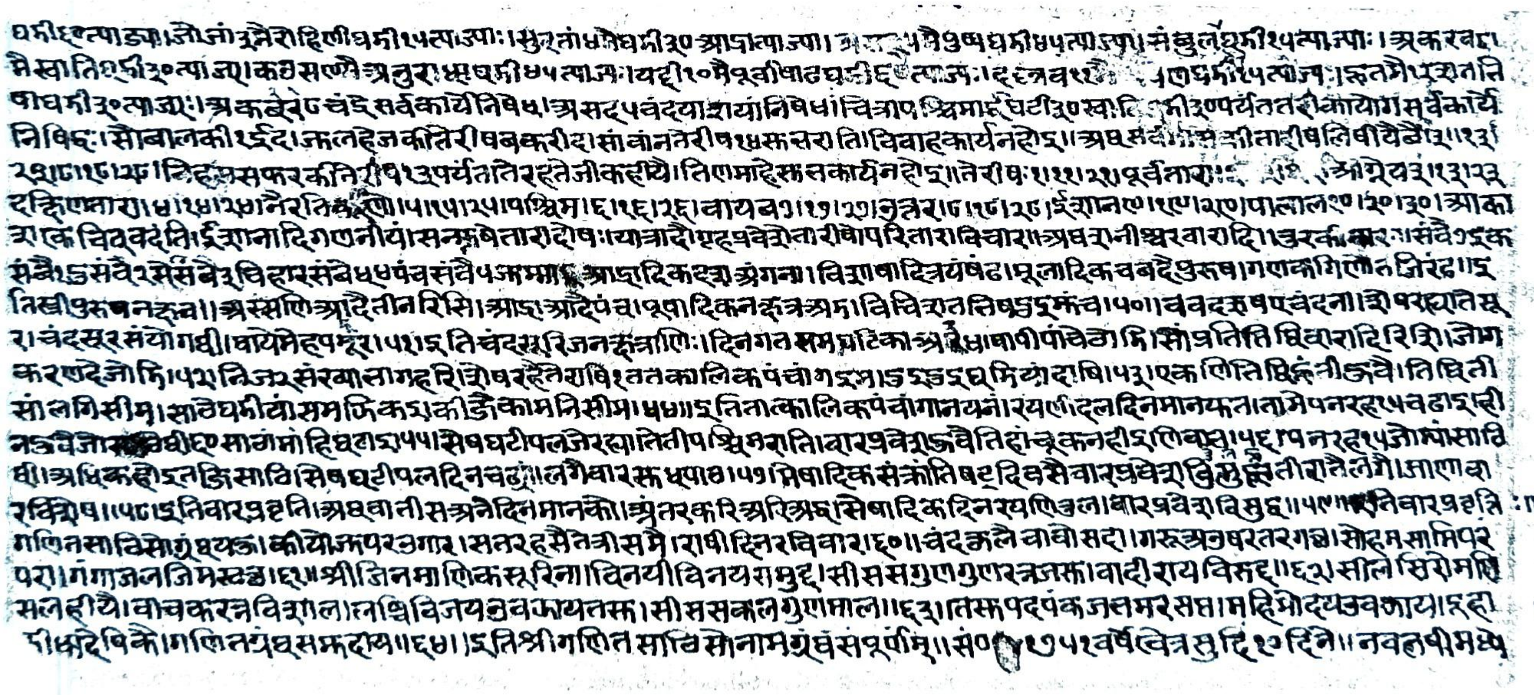

श्री मोहनलाल जैन ज्ञान भंडार, गोपीपुरा - सूरत (गुजरात)
में संरक्षित महिमोदय (1665 ई.) कृत गणितसाठसौ का अंतिम पृष्ठ

सौजन्य : श्री शैलेष कापड़िया, सम्पादक - जैन मित्र (सूरत)

कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर
KUNDAKUNDA JÑĀNAPĪṬHA, INDORE

वर्ष-30, अंक-4, अक्टूबर-दिसम्बर-2018, 27-30

अर्हत् वचन
कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर
ISSN 0971-9024

विलक्षण तीर्थ एवं कला क्षेत्र- नवागढ़

■ मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी*

सारांश

बुन्देलखण्ड में जैन समाज के अनेक तीर्थ हैं। इनमें इतिहास एवं पुरातत्त्व की अमूल्य निधियां संरक्षित है। नवागढ़ (जिला-टीकमगढ़) पुरातात्त्विक दृष्टि से अत्यनत समुद्ध क्षेत्र है, जिसका संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत है। यहाँ अन्वेषण की प्रचुर संभावनाएँ है।

भारतवर्ष अपनी संस्कृति, इतिहास, शिल्पकला, मूर्तिकला आदि विधाओं का संरक्षण करने वाला गौरवशाली देश हैं। यहां सभी धर्मों, संस्कृतियों, भाषाओं एवं कलाओं को समादर प्राप्त है। भारतीय कला एवं संस्कृति को आतताइयों एवं प्राकृतिक प्रकोपों ने नष्ट करने का कई बार प्रयास किया, परन्तु यह भारत की माटी में इतनी रची बसी हैं कि इनको समूल मिटाया जाना संभव नही हुआ।

मैं जैन कला शिल्प पर 40 वर्षों से निरंतर कार्य कर रहा हूँ। मैंने पाया कि दिगम्बरत्व का अपना विशिष्ट सौन्दर्य है, जो भौतिकता से परे आध्यात्मिक, वीतरागता एवं आन्तरिक शांति के रूप में प्रस्फुटित होता है, आवश्यकता है इस मुखरित मौन को आत्मसात करने की। मानव जीवन का यही चरम लक्ष्य भी है। इसे शिल्पियों ने प्रस्तर खण्डों पर अपनी छैनी से कलात्मक भाव-भंगिमा एवं मूक भाषा में बखूबी उकेरा है, जो अनूठा एवं अनुपम है। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि कलात्मक दृष्टि से दो वीतराग जिनबिम्ब अभिव्यक्ति के स्तर पर कभी समान नहीं हो सकते।

शिल्पियों ने अपनी कलात्मक भावना को इतना विस्तार दिया कि वीतराग बिम्ब भी परिकर के साथ मुखरित हो उठता है, जिसका प्रत्येक अंग हमें आकर्षित करता है, चाहे वह अष्ट प्रातिहार्य हो या मंगलद्रव्य, मुखाकृति हो या हस्तपाद विन्यास। यहाँ तक कि श्रीवत्स चिन्ह भी वक्ष स्थल की शोभा में वृद्धि करता है।

मैंने बहुत से सिद्धक्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीर्थक्षेत्र एवं कला क्षेत्रों में अन्वेषण कार्य किया है, परन्तु नवागढ़ प्राचीन नन्दपुर क्षेत्र का अपना वैशिष्ट्य है। यहाँ कला से लेकर संत-साधना सभी के आयाम स्थापित हुए।

ब्र. जय कुमार 'निशांत' ने नवागढ़ क्षेत्र के अन्वेषण, संरक्षण एवं संवर्धन में अथक श्रम किया है। उन्होंने प्रतिष्ठा कर्म जैसे लोकेषणा कार्य को विराम देकर संस्कृति-संरक्षण का लक्ष्य बनाया, यह उनका अदम्य साहस है। निशांत जी ने यहाँ कला की विभिन्न विधाओं वाले पुरातत्ववेत्ताओं को आमंत्रित करके नवागढ़ में विशेष अन्वेषण करवाया है, जिससे इस क्षेत्र की जीवन्तता पुरा-पाषाण काल से गुप्त, प्रतिहार, चन्देल एवं बुन्देलखण्ड तक सिद्ध हुई हैं।

चित्र-1

* एमिरेट्स प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उ.प्र.), निवास : डी-51/164-बी, सूरज कुण्ड, वाराणसी-221010 (उ.प्र.)

'निशांत जी' ने नवागढ़ आने का कई बार आग्रह किया पर टलता रहा । जैन कला पर कार्यरत डॉ. शांतिस्वरूप सिन्हा (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) के साथ मार्च 2018 में ही नवागढ़ आना सम्भव हो सका । 25 मार्च से 28 मार्च 2018 तक नवागढ़ एवं आसपास के क्षेत्रों का अन्वेषण करने पर हमें लगा कि यहाँ की कला देवगढ़ एवं खजुराहो की जैन कला का स्मरण कराती हैं ।

यहाँ के शैलाश्रय (कच्छप शिला एवं साधना गुफा) प्राकृतिक सौन्दर्य एवं शांति के मध्य ध्यान-साधना के विशेष स्थान हैं । इनमें उकेरी कायोत्सर्ग-मुद्रा (देखें, चित्र-1) एवं चरण चिन्ह गुप्तकालीन हैं । कच्छप गुफा के चित्रों मैं ज्यामितीय आकारों तथा पशुओं के चिन्ह हैं जो ई.पू. 1000 से पूर्व के लगते हैं । इससे सिद्ध होता है कि नवागढ़ क्षेत्र में जैन संतों का आवागमन तीसरी-चौथी सदी में होने लगा था । यहाँ प्राप्त विभिन्न मुद्राओं वाले उपाध्याय बिम्बों एवं मानस्तम्भ में उत्कीर्ण उपाध्याय बिम्बों से प्रतीत होता है कि देवगढ़ की तरह नवागढ़ भी विद्याध्ययन एवं साधना का विशेष स्थान रहा है, जिसकी स्थापना गुप्तकाल के आरंभ में हो गई थी ।

नवागढ़ में संगृहीत पुरासम्पदा से यहाँ कई जैन मंदिरों के होने का संकेत मिलता है । आसपास के निरीक्षण से ऐसे संकेत मिलते हैं कि यहाँ जैन मंदिरों के साथ वैष्णव एवं शैव मंदिर भी रहे होंगे जो भारतीय संस्कृति की समरसता को दर्शाते हैं ।

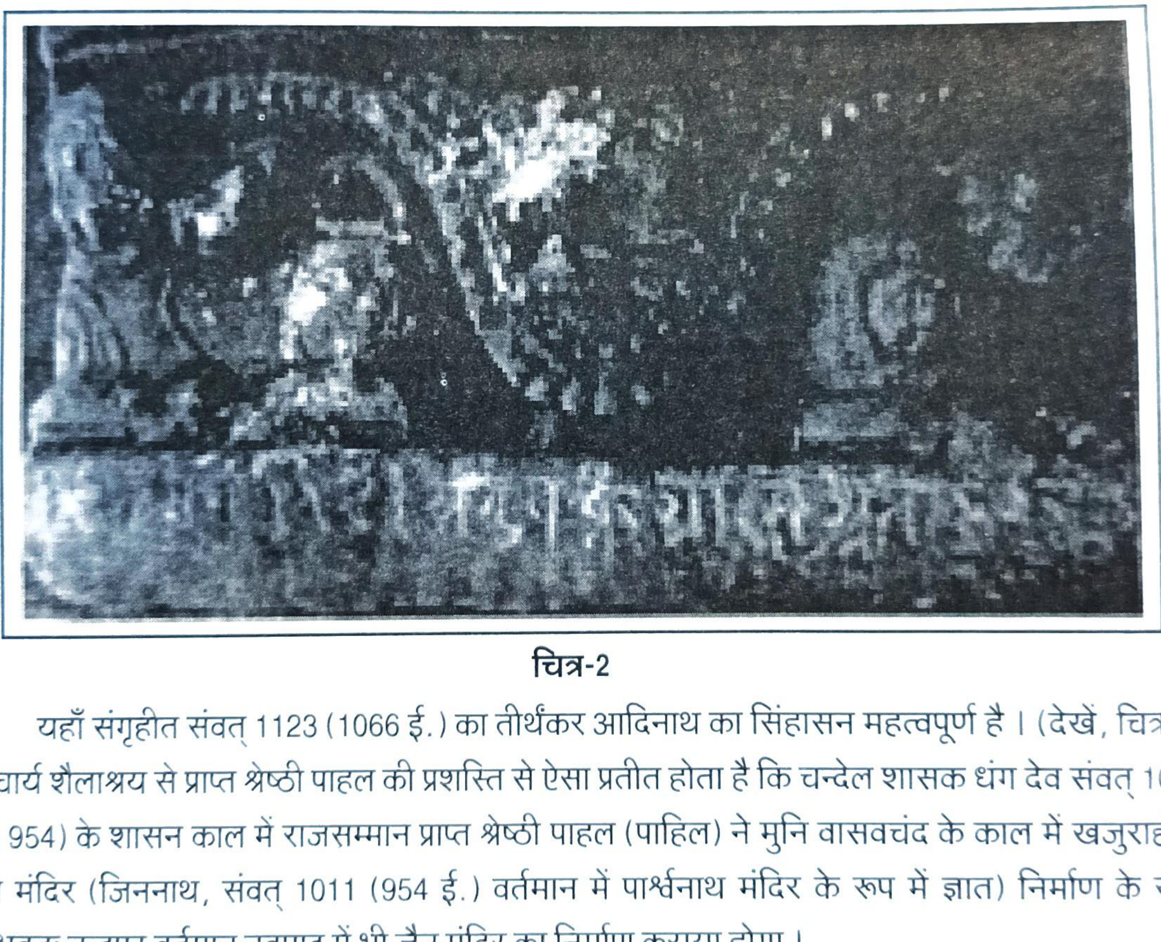

चित्र-2

यहाँ संगृहीत संवत् 1123 (1066 ई.) का तीर्थंकर आदिनाथ का सिंहासन महत्वपूर्ण है । (देखें, चित्र-2) आचार्य शैलाश्रय से प्राप्त श्रेष्ठी पाहल की प्रशस्ति से ऐसा प्रतीत होता है कि चन्देल शासक धंग देव संवत् 1011 (ई. 954) के शासन काल में राजसम्मान प्राप्त श्रेष्ठी पाहल (पाहिल) ने मुनि वासवचंद के काल में खजुराहों में जैन मंदिर (जिननाथ, संवत् 1011 (954 ई.) वर्तमान में पार्श्वनाथ मंदिर के रूप में ज्ञात) निर्माण के साथ सम्भवतः नन्दपुर वर्तमान नवागढ़ में भी जैन मंदिर का निर्माण कराया होगा ।

पहिल के पौत्र महिचन्द्र और प्रपौत्र देल्हण ने संवत् 1195 (1138 ई.) में तीर्थंकर महावीर मूर्ति की स्थापना कराई । नवागढ़ तीर्थ में मंदिर निर्माता श्रेष्ठियों के पृथक-पृथक बिम्ब भी विलक्षण हैं ।

नवागढ़ साधना तीर्थ में प्राचीन काल से वर्तमान काल तक सतत जैन संतों का आवागमन एवं विशाल मंदिरों का निर्माण हुआ जिससे स्पष्ट होता है कि यहाँ के श्रावक समृद्धशाली एवं धार्मिक प्रवृत्ति के थे ।

नवागढ़ की जैन कला का समावेशी स्वरूप एक लम्बे इतिहास को संजोये है, जिसमें वीतरागी तीर्थंकरों की मनोहारी मूर्तियों को पारम्परिक मुद्राओं-ध्यान और कायोत्सर्ग में निरूपित किया गया है । तीर्थंकरों की शताधिक मूर्तियों में अधिकांशतः पीठिका पर उनके पारम्परिक लांछन और सिंहासन, चामरधारी सेवक तथा शीर्ष भाग में त्रिछत्र जैसे प्रातिहार्य देखे जा सकते हैं। सामान्यतः पीठिका के छोरों पर यक्ष-यक्षिणी भी निरूपित हैं ।

ऋषभनाथ और नेमिनाथ के साथ क्रमशः पारम्परिक यक्ष-यक्षी, गोमुख-चक्रेश्वरी और कुबेर-अम्बिका की मूर्तियाँ रूपायित हैं ।

12वीं शती ई. के तिथि युक्त संवत् 1203 (1146 ई.) के मानस्तम्भों के कई उदाहरणों में देवगढ़ के समान ही ऊपरी भाग में तीर्थंकरों और उपाध्यायों की आकृतियां उत्कीर्ण हैं, जबकि नीचे चारों और यक्षियों की मूर्तियों हैं जिनमें चक्रेश्वरी, अम्बिका, पद्मावती एवं ज्वालामालिनी को पहचाना जा सकता है ।

अभिलेखों की दृष्टि से भी नवागढ़ की जैन पुरा-सम्पदा महत्वपूर्ण है । इनमें संवत् 1123 से संवत् 2059 (1066 से 1997 ई.) तक के कई मूर्तिलेख हैं जो नवागढ़ की पुरातत्व यात्रा के विकास पर कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं । इन लेखों में सामान्यतः मूर्ति की स्थापना से संदर्भित भट्टारक पद्मदेव, राजपुत्र देवपाल तथा श्रेष्ठी कुल के गोलापूर्व अन्वय से सम्बन्धित साहू रामचन्द्र, बालू, महीचन्द, देल्हण और नारी प्रतिष्ठाकर्त्री के नाम महत्त्वपूर्ण हैं ।

तीर्थंकर मूर्तियों के अतिरिक्त उपाध्यायों की स्वतंत्र मूर्तियाँ शास्त्र एवं शिक्षा की दृष्टि से नवागढ़ के महत्व को प्रदर्शित करती हैं । इनके अतिरिक्त क्षेत्ररक्षक देवता के रूप में क्षेत्रपाल (13वीं शतीं) के शीर्ष भाग में छोटी तीर्थंकर मूर्ति है । नायिकाओं या अप्सराओं तथा तीर्थंकर मूर्तियों में सर्वालंकृत चामरधारों की आकृतियाँ कलात्मक दृष्टि से उल्लेखनीय हैं ।

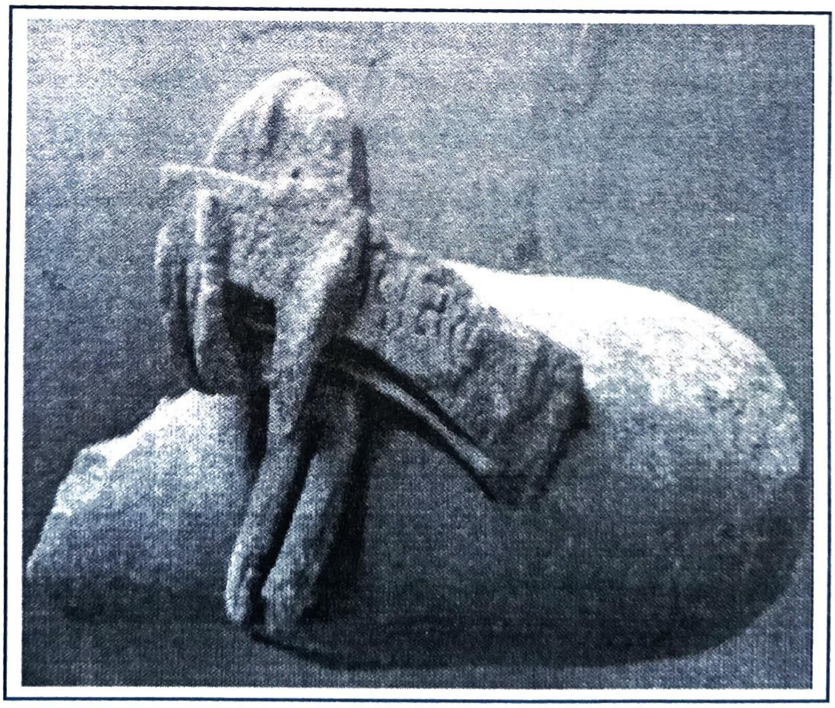

चित्र-3 (खण्डित उपाध्याय मूर्ति के कर में पुस्तक)

वर्तमान मंदिर अरनाथ (18वें तीर्थंकर) को समर्पित है जो नवागढ़ क्षेत्र का मुख्य जैन मंदिर है । गर्भगृह में प्रतिष्ठित लगभग 4.75 फीट की कायोत्सर्ग मूर्ति सन् 1959 में उसी स्थान से खुदायी में प्राप्त हुयी थी, जो 10वीं शती की प्रतीत होती है । अरनाथ के दोनों पार्श्वों में कुन्थुनाथ और शांतिनाथ की सुन्दर कायोत्सर्ग मूर्तियाँ देखी जा सकती हैं, जिन्हें 1985 में स्थापित किया गया था । इस प्रकार शांतिनाथ, अरनाथ और कुन्थुनाथ (पूर्व में चक्रवर्ती, कामदेव और बाद में कैवल्य व दीक्षा के बाद तीर्थंकरों के रूप में) भगवान की मूर्तियाँ वर्तमान में पूजा में हैं ।

चित्र-4

वर्तमान अरनाथ मंदिर के ऊपरीतल एवं अन्य भागों में 20वीं शती की कई तीर्थंकर मूर्तियाँ हैं । मूलनायक भगवान अरनाथ के जीवन दृश्यों का विस्तृत उत्कीर्णन भोंयरे की भीतरी भित्तियों पर दृष्टव्य है जो इसके आकर्षण को द्विगुणित करता है । मंदिर के प्रांगण की दीवार में मानस्तम्भ के सामने मूल मंदिर के वितान का अवशेष भी लगाया गया है जो 10वीं शती ई. के मंदिर की विशालता का साक्षी है ।

मंदिर प्रांगण के आवासीय भवन के ऊपरी तल के मंदिर में भी धातु एवं प्रस्तर की कई तीर्थंकर मूर्तियाँ सुरक्षित हैं । इनमें 13 धातु मूर्तियों विशेष उल्लेखनीय हैं जो आकार में एक से ग्यारह इंच की हैं । इनमें संवत् 1548 (1491 ई.) की डेढ़ इंच की पार्श्वनाथ की धातु मूर्ति में सर्प फणों का छत्र सुन्दर है । संवत् 1586 (1529 ई.) की पार्श्वनाथ की दूसरी ध्यानस्थ ताम्र धातु की मूर्ति (11 इंच) में उनके धरणेन्द्र यक्ष एवं पद्मावती यक्षी का पारस्परिक आयुधों, वाहनों एवं सर्प फणों के छत्र सहित अंकन हुआ है । (देखें, चित्र-4) इसी प्रकार नेमिनाथ की संवत् 1490 और विमलनाथ की धातु मूर्तियाँ भी हैं । 17वीं से 20वीं शती ई. के मध्य की ऋषभनाथ, शांतिनाथ, कुन्थनाथ एवं पार्श्वनाथ की प्रस्तर मूर्तियाँ भी कला एवं आस्था की दृष्टि से ध्यातत्व हैं ।

जैन कला के विविध रूपों के साथ ही नवागढ़ क्षेत्र में वैदिक पौराणिक परम्परा की देव मूर्तियाँ भी उपलब्ध हैं, जो वैष्णव या शैव मंदिरों के इस क्षेत्र में रहे होने को प्रमाणित करती हैं । इन मूर्तियों में ब्रह्मा, विष्णु, शिव, शक्ति, कार्तिकेय, सूर्य एवं अप्सराओं की मूर्तियाँ क्षेत्र के आस-पास बिखरी हुई देखी जा सकती हैं, जिनका समुचित रख-रखाव आवश्यक है । वस्तुतः नवागढ़ का जैन कला के साथ ही एक समावेशी कला क्षेत्र के रूप में सम्यक् विकास अपेक्षित हैं ।

नवागढ़ में अन्वेषण की बहुत संभावनाएँ हैं । यहाँ के शिल्प का गहन दृष्टि से निरीक्षण और विस्तृत अध्ययन करने की आवश्यकता है । इस भूमि के गर्भ में संस्कृति के कितने रहस्य छिपे हैं, कहा नहीं जा सकता, पर यह निश्चित है यह उस काल का महत्वपूर्ण स्थल रहा होगा, जहाँ जैन-धर्म, संस्कृति, कला एवं साधना का विकास श्रेष्ठतम स्तर पर हुआ ।

प्राप्त : 26.10.18